

**विसर्जनीय** वि. (तत्.) दान करने योग्य, त्यागने योग्य पुं. एक अक्षर का संकेत, विसर्ग।

**विसर्जित** वि. (तत्.) 1. जिसका विसर्जन हो चुका हो 2. छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ 3. जो (पूजा/पाठ के बाद) विदा किया गया (देवी-देवता), प्रेषित, भेजा हुआ।

**विसर्प** पुं. (तत्.) 1. रेंगना, सरकना, साँप की तरह तेज गति से या कुंडली के आकार में चलना 2. किसी कर्म का अनाश्रित और अनपेक्षित परिणाम 3. रोग विशेष जिसमें ज्वर के साथ-साथ सारे शरीर में छोटी-छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं, सूखी खुजली भूगो. किसी मंद गति से बहने वाली नदी या घाटी के मार्ग में आने वाला वलयाकार मोड़ भाषा. श्रुति का पर्याय।

**विसर्पण** पुं. (तत्.) 1. धीमी चाल से चलना, सरकना 2. रेंगना 3. व्याप्ति, प्रसार 4. स्थान त्याग।

**विसर्पी** वि. (तत्.) 1. (पौधा या लता) जो भूमि पर फैले अथवा दीवार आदि पर चढ़े 2. रेंगते हुए चलने वाला 3. चाल में साँप के समान लहराव वन. (पौधा) जिसका तना जमीन से रेंगता हुआ बढ़ता है और जिसकी प्रत्येक गाँठ से जड़ें निकलती हैं।

**विसाल** पुं. (अर.) (आत्मा-परमात्मा अथवा प्रेमी-प्रेमिका का) प्रयो. 'न खुदा ही मिला न विसाले सनम' पुं. (तद्.) दे. विशाल।

**विसिनी** स्त्री. (तत्.) कमल का पौधा, मृणाल, पद्म समूह।

**विसिषासन** पुं. (तत्.) विशिखासन, धनुष।

**विसुग्राहीकरण** पुं. (तत्.) चि. संवेदनशीलता को अत्यधिक न्यून कर देना, विसंवेदीकरण।  
desensitization

**विसूचिका** स्त्री. (तत्.) एक संक्रामक रोग जिसमें कै (उल्टी) और दस्त होते हैं और पेशाब बंद हो जाता है, हैजा, विषूचिका।

**विसूरना** अ.क्रि. (तद्.) अत्यधिक शोक करना, विरक्त हो जाना।

**विसृत** वि. (तत्.) 1. फैला, फैलाया हुआ 2. छाया हुआ, व्याप्त 3. कहा हुआ, कथित, उक्त, उच्चरित।

**विसृष्ट** वि. (तत्.) 1. जिसका निर्माण किया गया हो, बनाया हुआ, निर्मित, रचित 2. त्यागा हुआ, त्यक्त 3. बहाया हुआ अथवा फेंका हुआ।

**विसृष्टि** स्त्री. (तत्.) 1. परित्याग 2. निर्माण, रचना, सृष्टि 3. संतान।

**विसेश** वि. (तद्.) जिसके कारण कोई वस्तु, व्यक्ति या बात दूसरी वस्तु, व्यक्ति अथवा बात से भिन्न या विशिष्ट हो, विशेष।

**विसैन्यीकरण** पुं. (तत्.) राज. किसी स्थान, क्षेत्र अथवा प्रदेश से सशस्त्र सेनाओं को हटा देना।

**विस्कंभ** पुं. (तत्.) 1. बाधा, रुकावट, अड़चन, अवरोध 2. द्वार की अर्गला, चटखनी 3. स्तंभ, खंभा 4. वृक्ष 5. विस्तार, फैलाव नाट्य. अर्थोपक्षेप का एक भेद, रूपक में भूत और भविष्य की घटनाओं की सूचना देने वाली एक प्रणाली जिसका प्रयोग प्रायः अंक के आरंभ में होता है ज्यो. 27 योगों में से एक योग।

**विस्तर** पुं. (तत्.) 1. प्रसार, फैलाव, व्याप्ति 2. विस्तृत विवरण 3. विपुलता, बहुल 4. समूह, संख्या, आधार 5. प्रणय।

**विस्तरण** पुं. (तत्.) किसी वस्तु आदि का विस्तार करने का कार्य।

**विस्तरन** पुं. (तत्.) विस्तरण।

**विस्तार** पुं. (तत्.) लंबे-चौड़े होने का भाव, फैलाव 2. बढ़ाव, वृद्धि 3. ब्यौरा 4. वृत्त का व्यास 5. पेड़ की डाली या शाखा जिसमें नए पत्ते लगे हों, झाड़ी।

**विस्तारण** पुं. (तत्.) 1. विस्तार करने, फैलाने की क्रिया 2. कार्य-क्षेत्र बढ़ाना 3. किसी वस्तु में कुछ नया जोड़ने का कार्य 4. राज्य की सीमा-वृद्धि तथा अधिकार क्षेत्र में वृद्धि, किसी